वेद आदि सृष्टि के आदि ग्रंथ हैं ?

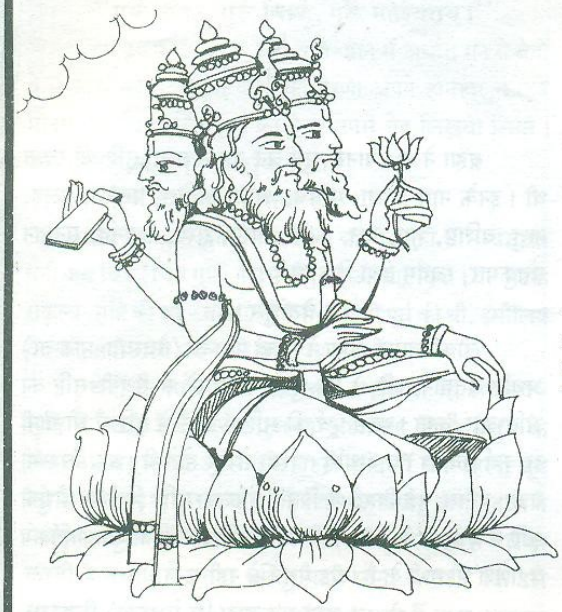

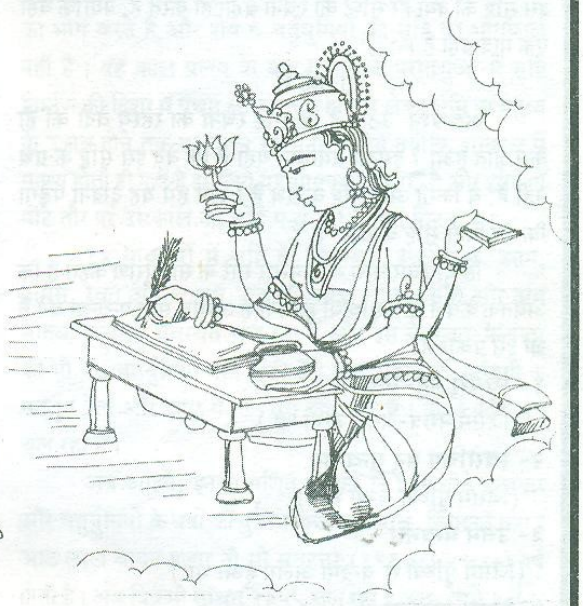

ऋग्वेद की रहस्यमयी-सूक्तियों में सबसे बड़ी रहस्यमयी-सूक्ति, है-'' नासदीय-सूक्ति,'' जहाँ से दर्शनशास्त्र का जन्म होता है। इस सूक्ति का पाँचवा और छठा भाग एक अद्‌भुत-रहस्य की पर्तें खोल रहा है, देखिये-

'' को अद्धावेद का इह प्रवोचत्कुत,
आजाता कुत इयं विसृष्टिः।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा,
को वेदयत आवभूव ।। ६ ।।
इयं विसृष्टिर्यत आवभूव
यदि वा दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमेव्योमन्त्सो,
अङ्गवेद यदि वा न वेद ।। ७ ।।

(ऋ. ऋ ८/ऋ.९/व. १९)

अर्थात्: '' सचमुच कौन जानता है कि और यहाँ कौन कह सकता है कि (यह सब) कहाँ से उपजा और इस विश्व की सृष्टि कहाँ से आई ? देवताओं की उत्पत्ति पीछे की है और यह सृष्टि पहले आरम्भ हुई। फिर कौन जान सकता है कि यह सब कैसे आरम्भ हुई। (वेद ने जो उपर्युक्त वर्णन किया है, वह वेदों को ही कैसे ज्ञात हुई ? यहाँ व्याज से वेदों का अनादि होना व्यंजित किया है) जिससे इस विश्व की सृष्टि आरम्भ हुई, उसने यह सब रचा है। (अपनी इच्छा शक्ति से सृष्टि की प्रेरणा की है) या नहीं रचा है अर्थात उस की प्रेरणा के बिना ही आप ही आप हो गयी है। परम-व्योम में जिसकी आँखें इस विश्व का निरीक्षण कर रही हैं वस्तुतः (इन दोनों बातों के रहस्य को) वही जानता है। या शायद वह भी नहीं जानता(क्योंकि उस निर्गुण और निराकार में सृष्टि से पहले ज्ञान, इच्छा और क्रिया इन तीनों का भाव नहीं था ।। ''

।। विश्लेषण ।।

यहाँ दो पदार्थ ध्यान देने योग्य हैं। पहला तो यह कि 'यह वेदों को ही कैसे ज्ञात हुई ?'' तथा दूसरी यह कि वेदों को ज्ञात हुई तभी तो वेदों में इस की रचना का वर्णन आया है। .....हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार यदि कर्म है तो कर्त्ता भी है। नासदीय सूक्ति के पहली ही ऋचा में यह कह दिया गया है कि 'जब यह कार्य-सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई थी, तब एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर और दूसरा जगत का कारण अर्थात् जगत बनाने की सामग्री

विराजमान थी। इसी आधार पर जर्मनी के प्रसिद्ध-दार्शनिक कांट ने यह कहा था कि मुझे जगत बनाने के पदार्थ दे दो- मैं जगत बना दूँगा। वेदांती इस पदार्थ को 'माया' कहते हैं और बनाने वाले को 'ब्रह्म' अर्थात् ब्रह्मा। सारे के सारे पुराण एक स्वर से यह कहते हैं कि इस सृष्टि की क्या हर सृष्टि की रचना ब्रह्मा ही करते हं, क्योंकि वही एक मात्र ब्रह्म हैं।

।। तर्क ।।

अब प्रश्न उठता है कि सृष्टि रचना का रहस्य वेदों को ही कैसे ज्ञात हुआ ? इसका समाधान यही है कि वेद इस सृष्टि के ग्रंथ नहीं है, वे किसी और सृष्टि के ग्रंथ हैं। अब हमें यह देखना पड़ेगा कि वेद किस सृष्टि के ग्रंथ हैं ?

हिन्दूविचार धारा के अनुसार सारे के सारे पुराण कहते हैं कि अबतक केवल सात सृष्टियाँ ही बनी हैं अर्थात् सात मन्वन्तर बने हैं जो इस प्रकार हैं:

१- स्वयंभु मनु-मन्वन्तर
(जिसमें नछत्र-जगत जन्मा था)

२- स्वरोचिष मनु मन्वन्तर
(जिसमें पृथ्वी जन्मी थी।)

३- उत्तम मन्वन्तर
(जिसमें पृथ्वी से चन्द्रमा अलग हुआ था)

४-तामस मन्वन्तर
(जिसमें समुद्र से भूमि निकली थी।)

५- रैवत मन्वन्तर
(जिसमें बनस्पतियाँ जन्मी थीं)

६- चाक्षुसु मन्वन्तर
(जिसमें पशु-पक्षी जन्मे थे।)

७- वैवस्वत: मन्वन्तर
(जिसमें मनुष्य जन्मा था।)

यह वर्णन श्वेत-वाराह-कल्प का है जिसमें लोकमितामह-ब्रह्मा क्रम-क्रम से महत्तत्त्व, अहंकार, भूतसर्ग, इन्द्रियाँ, देवता, अविद्या, वैकृत, तिर्यक, मनुष्य तथा प्राकृत- योनियों को जन्म दते हैं।

।। सृष्टिक्रम की तालिका ।।

आदि-सृष्टि से आधुनिक - सृष्टितक आते आते जो कुछ घटित हुआ है उसे आप इस तालिका द्वारा देखिये -

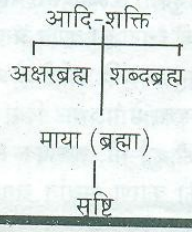

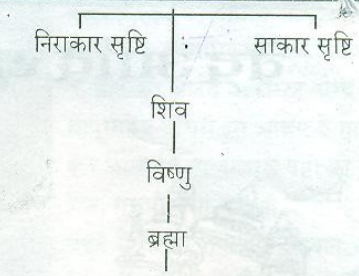

ब्रह्मा ने १७ मानस-पुत्र जने यह संकल्प-सृष्टि की रचना थी। इनके नाम क्रमशः मरीचि, अत्रि, अंगिरा. प्रलस्त, प्रलह, ऋतु, वशिष्ठ, भृगु, दक्ष, कर्दम, नारद, सरद, सदानंद, सनातन संतकुमार, स्वयंम् तथा चित्रगुप्त हैं।

।। वेदांकुर ।।

लोकपितामह-ब्रह्मा ने सातवे मन्तन्तर (वैवस्वत-मन्वन्तर) अर्थात् वर्तमान सृष्टि में स्त्री-पुरूष के युग्मों से मैथुनी-सृष्टि का अविष्कार किया। इससे पूर्व की सृष्टियाँ संकल्प सृष्टियाँ थी यानी हर कर्म संकल्प तप अर्थात् तपस्या से पूरे होते थे। ब्रह्म के सभी सत्रह-मानस-पुत्र किसी न किसी संकल्प-सृष्टि (वर्तमान मैथुनी सृष्टि से पूर्व) के थे - यह निश्चित है। शिव के दोनो पुत्र कार्तिकेय व गणेश भी तभी के हैं। यह मैथुन से नहीं जन्मे थे।

।। श्रुति का जन्म ।।

जब इस पृथ्वी पर ब्रह्मा ने मनुष्य पैदा कर दिया तब उसके लिये पिता। (परमपिता) होने के नाते आचार-संहिता भी बना दी जो श्रुति अर्थात सुनने सुनाने व इसी प्रकार युग-युगान्तरों में प्रयुक्त होती हुई श्रुति-श्रुति ही बनी रही।

सवाल पैदा हुआ कि इस श्रुति को स्थायित्व कैसे दिया जाय ? इसे ग्रंथ का आकार कैसे दिया जाय ? ब्रह्मा ने इसी उद्देष्य की पूर्ति के लिये एक के बाद एक सोलह-मानस पुत्र जन्मे पर वे सब के सब बेकार साबित हुये। हारकर ब्रह्मा ने वेद नामक ग्रंथ को बनाने व आचार-संहिता का अक्षरक्ष पालन कराने के लिये सातवाँ-संहिता मानस पुत्र जन्मा जो अपने चारो हाथों में कमल, दवात स्याही और पट्टिकायें लेकर जन्मा। इसी का नाम था - 'चित्र' (= अर्थात् चित्रगुप्त)।

ऋग्वेद में जिन जिन देवताओं की स्तुतियाँ हैं 'चित्र' (अर्थात् चित्रगुप्त) उन देवताओं में ६४ वें देवता हैं। कुल देवताओं की संख्या ७९ है।

कालान्तर में, इन्हीं चित्रगुप्त ने अपने पिता ब्रह्मा से ब्राह्मी भाषा व ब्राह्मी-लिपि सीखकर ब्रह्म (= मंत्र) रचे। बाद में यही ब्राह्मी-लिपि व ब्राह्मीनष्टा संस्कृत बन गयी जिससे सैकड़ों भाषाओं ने जन्म लिया। आदि-सृष्टि में यही भाषा की दैवी-सृष्टि का दैवी

प्रेरणा का सिद्धांत कहता हूँ। कीलाक्षरों से युक्त इस भाषा से चित्रगुप्त ने ब्रह्मा-विष्णु -महेश्वर की कृपा से एक वेद रचा जिसमें सम्पूर्ण-श्रुति समा गयी। तभी उनके श्रीमुख से यह आरतीभाव प्रस्फुटित हुआ -

''गुर्रू-ब्रह्मा, गुर्रू विष्णु, गुर्रू महेश्वराय।''

इस प्रकार महाब्रह्मा ने तो श्रुति-ज्ञान में अर्थात् मन से वेदों के आकार को प्रकाशित करने की प्रेरणा अपने होनहार सत्रहवें मानस-पुत्र चित्र (चित्रगुप्त) को देकर उनसे वेद लिखवा लिया। और गगन गगन में यह मंत्र गुंजा दिया -

''तेषां ज्ञानमध्ये प्रेरिता:।''

जबतक श्रुति श्रुति रही तबतक वह वेद नहीं थी - वेद तब बनी जब चित्र (चित्र गुप्त) ने उसे ग्रंथ का आकार दिया। यह घटना संकल्प-सृष्टि की थी - वर्तमान मैथुनी-सृष्टि से पूर्व की थी, इसीलिये वेद को अपौरूषेय कहने की प्रथा पड़ गयी है।

वेदों के साथ साथ मोर और बगुलिया भी संकल्प-सृष्टि के पक्षी हैं जिनका प्रजनन आजतक बिना मैथुन के होता है। बगुलिया आसाढ़के पहले बादलों की पहली बूंद को अपने गर्भ में धारण करती है जिसका वर्णन कालिदास ने मेघदूत में किया हैं और मोरनी मोर के आँसू पीकर गर्भ धारणा करती है तभी उसे इतना पवित्र पक्षी माना जाता है कि उसे सरस्वती (जैनधर्म में) अपना वाहन बनाती हैं तथा भगवान कृष्ण उसके पंख अपने मुकुट में लगाते हैं तथा साधू सन्यासी पूजापाठ में मयूर पक्खों का प्रयोग करते हैं।

।। उपसंहार ।।

अब यह निर्णय करना कि वेद किस संकल्प-सृष्टि के ग्रंथ हैं, उन योगियों का काम है जो योग-साधना से परब्रह्म के अन्तस्थल के दर्शन (= साक्षात्कार) करके यह देख आयें कि यह दैवी-घटनायें, जिसमे श्रुति वेदाकार हुई थी, किस युग का कृतित्व है ? जहाँ तक मेरे जैसे एक खोजी के प्रयत्नों का प्रतिफल है, मैं तो केवल यही कह सकता हूँ कि आदि-वेद (एक वेद) आदि-सृष्टि का कृतित्व है।

मनुस्मृति के अनुसार एक हजार चर्तुयुगी का बाह्यदिन अर्थात एक सृष्टि का काल होता है और एक हजार चतुर्युगी की ही एक ब्रह्मरात्रि यानी प्रलय होती है। एक ब्राह्मदिन में १४ मनवन्तर होते हैं और एक मन्वन्तर में ७१ चर्तुयोगियाँ होती हैं। **एक चर्तुयुगी में सत्तर लाख, अट्ठाईस हजार, वर्षों का सतयुग, बारह लाख छियानवे हजार वर्षों का त्रेता, आठ लाख चौंसठ हजारं वर्षों का द्वापर तथा चार लाख बत्तिस हजार वर्षों का कलियुग होता है। यह सब मिलाकर एक चर्तुयुगी में तैतालिस लाख बीस हजार वर्ष होते हैं।** १४ मन्वन्तरों की कुल ११५ चर्तुयुगियाँ बनती हैं। एक ब्रह्मदिन में १४ मन्वन्तर होते हैं और उसमें एक हजार चतुर्यगियाँ होती हैं। इन दोनों गणित में ६ चर्तुयगियों का अन्तर पड़ जाता है। इस अन्तर का समाधान दयानंद ने ''१४ मन्वन्तर सृष्टि का भोगकाल'' कहकर इस प्रकार किया है कि १४ मन्वन्तर के समय को मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार सृष्टि के पदार्थों का भोग करते हैं और शेष ६ चर्तुयुगियों का सृष्टि का भोगकाल नहीं है। वह काल प्रलय के बाद प्रकृति के परमाणुओं में सृष्टि निर्माण की दिशा में प्रथम क्षोभ उत्पन्न होने से लेकर भूमि पर मनुष्य के उत्पन्न होने तक का काल समझना चाहिये क्योंकि इसकाल में मनुष्य होता ही नहीं है इसलिये यह भोगकाल ही नहीं है और इसलिये मोटे तौर पर उसकाल को कोई मन्वन्तरों में नहीं गिनता है।

१४ मन्वन्तरों में सृष्टि के स्वायंभव, स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत और चाक्षुष, यह छ: मन्नन्तर बीत चुके हैं और अब सातवाँ मन्वन्तर वैवस्वत चल रहा है और इस वैवस्वत-मन्वन्तर की भी २७ चतुर्युगियाँ बीत चुकी हैं। अब अट्ठाइसवें चर्तुयुगी के सतयुग त्रेता और द्वापर ये तीन युग बीत चुके हैं। चौथा कलि युग चल रहा है।

अब आइये, इनका गणित भी कर लें। इन बीते मन्वन्तर और चतुर्युगियों के वर्षों की कुल संख्या एक अरब, छियानवे करोड़ आठ लाख बावन हजार नौ सौ सतहत्तर (१९६०८५२९७७) वर्ष होती है। अब विक्रमी सम्वत् २०५५ चल रहा है अत: इसमें २०५५ और जोड़ लिये जाँय, इसप्रकार मानवसृष्टि और वेदोत्पत्ति के काल को अबतक एक अरब, छियान्ववे करोड़ आठ लाख, पचपन हजार, बत्तीस (१९६०८५५०३२) वर्ष हो चुके हैं।

प्रकृति के परमाणुओं में सृष्टि निर्माण को दिशा में उत्पन्न प्रथम क्षोभ से आरम्भ होकर प्रलय आराम होने तक ब्रह्मदिन या सृष्टि का काल, चार अरब, बत्तिस करोड़ (४३२०००००००) वर्षों का होता है और मनुष्योत्पत्ति से आरम्भ करके प्रलयारम्भ होने तक ब्रह्मदिन या सृष्टि का काल चाल अरब, उनतीस करोड़ चालीस लाख, अस्सी हजार (४२९४०८०००००) वर्ष होता है, यह सृष्टि का भोगकाल है। यही सृष्टिकाल है क्योंकि आदमी इसी कालावधि में सृष्टि में रहता है।

मेरा यह गणित मनुस्मृति और महाभारत से अक्षरक्ष मेल खाता है। मनु १/२१ में लिखते हैं -

''सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक पृथक्।
वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्याश्च निर्ममे ।।''

अर्थात् - परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में वेदों के शब्दों से ही सब वस्तुओं और प्राणियों के नाम और कर्म तथा लौकिक व्यवस्थाओं की रचना की है।

महाभारत (शांतिपर्व २३२/२४) में लिखा है -

''अनादि निधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा ।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः ।।''

अर्थात् - स्वमम्भू परमात्मा ने सृष्टि आरम्भ में वेद रूप नित्य दिव्यवाणी का प्रकाश किया जिससे मनुष्यों के सारे व्यवहार सिद्ध होते हैं ।

यही बात महाभारत के शांतिपर्व के मोक्ष धर्म के अध्याय २३२/२५-२६ में भी दोहराई गयी है । कहा भी गया है -

वेदे भूतानां कर्मणां च प्रवर्तनम् ।
नाम घटान्य एवादौ निर्मिमीते य ईश्वर : ।।
शब्दनाम् चर्णीणां याश्च वेदेषु दृष्ट्यः ।
विजन्ते सुजातानां तान्येवैभ्यो ददाव्यज : ।।

-महाभारत शांति पर्व मोक्ष धर्म अध्याय २३२/२५/२६

अर्थात् - 'प्रलय के बाद सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने वेदों का उपदेश दिया और उसके द्वारा विविध प्रकार के कर्म करने की शिक्षा दी ।'

।। अंत में ।।

निश्चय ही, वेद आदि सृष्टि के आदि ग्रंथ हैं । श्रुति को उनके सत्रहवें मानस-पुत्र चित्रगुप्त ने वेदाकार दिया, ग्रंथ का रूप दिया । कालांतर में वर्तमान द्वापर के अंत में बादरायण ने लोगों के लिये उसे सुलभ कराने के लिये चार भागों में बाँट दिया जो कि क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद कहलाये । मैं, अंत में, अपने इस परिभाषण की समाप्ति अपनी इस लघु काव्याँजलि से करके ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ जिसने हमें वेद प्रदान किये हैं -

।। समापनाँजलि ।।

आदि-सृष्टि में आदि ब्रह्म ब्रह्मा ने, श्रुति को जन्म दिया ।
जिसे पुत्रवर चित्रगुप्त ने, वेदाकाराकार दिया ।।
महर्षि बादरायाण ने जिसको चार विभागों में बाँटा ।
इस प्रकार कर व्यासचार वेदों का प्रबल प्रचार किया ।।
ऋक. यजु. साम. अथर्व. नाम से, जो सहसा विख्यात हुये ।
महर्षिबादरायण यों वेदव्यास बनकर जग-ज्ञात हुये ।।
वेद ब्रह्म की आत्मा से प्रकटे हैं दिव्य-दिप्ति बनकर ।
लिखकर जिनपर भाषण मंजुल, आज्ञातों में ज्ञात हुये ।

आचार्य -श्री. रसिक बिहारी मंजुल,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७

***